बन्द कर देना चाहिए। फूलों में जब फल लग जाए और मटर के दाने के बराबर हो तब सिंचाई करना आरम्भ कर देना चाहिए ताकि बगीचे में समुचित नमी बनी रहे और फलों का अच्छा विकास हो सके और फलों का झड़ना भी कम हो सके। अभी के समय में ड्रिप सिंचाई ज्यादा फायदेमंद है इससे पौधों में पानी की सिर्फ उचित मात्रा पहुँचती है और एक पौधे की बीमारी दूसरे पौधे तक नहीं पहुँचती। ड्रिप सिंचाई से खरपतवार नियंत्रण भी होता है। और उर्वरकों की उत्पादन क्षमता का भी विकास होता है।

रोग एवं कीट प्रबंधन

आम के वृक्षों में मंजर लगते समय या इसके पूर्व कई प्रकार के कीट एवं बीमारियों का प्रकोप होता है। इनसे पौधों एवं फलों को बचाना आवश्यक होता है। कीड़ों में मधुआ, दहिया, एवं फल मक्खी का प्रकोप आम तौर पर होता है। बीमारियों में कन्जली फफूंदी, उकठा रोग एन्थ्रक्नोज और पाउडरी मिल्डू का प्रकोप बहुधा देखने को मिलता है। कीड़ों एवं बीमारियों के प्रकोप से वृक्षों पर फल नहीं टिकते और बहुत कम उपज प्राप्त होती है। कई बार संपूर्ण फसल ही नहीं मिल पाती ।

मधुआ के नियंत्रण हेतु मंजर निकलते समय रोगर या थायोड (35 ई.सी.) या सैपरमेथ्रिन दवा का 30 मि.ली. 30 लीटर पानी में मिलाकर दो से तीन बार 10–15 दिन के अंतराल छिडकाव करें। पहला छिडकाव फूल निकलने से पूर्व या मंजर निकलते समय, दूसरा फूल खिलने के पहले एवं तीसरा दूसरे छिडकाव से एक महीने के बाद जब फल सरसों के दाने के बराबर हो जाये तब करें।

दहिया के नियंत्रण के लिए मेधाईल पैराथीओन 2 प्रतिशत धूल का 5 किलो प्रति वृक्ष की दर से पेड के चारों तरफ मिट्टी में दिसम्बर माह के प्रारंभ में मिलावें। जमीन की सतह से 100 से.मी. की ऊंचाई तक पेड की धड पर 10 से.मी. चौडा लेप लगा दें। दूसरा लेप पहले लेप से 10 से.मी. ऊपर लगा दें। ऐसा करने से पेड पर चढने वाले कीडे सटकर मर जाते हैं। यदि लेप उपलब्ध नहीं हो तो सेलोटेन कागज या अलकाधिन को 20–25 से.मी. चौडी पट्टी लपेट दें तथा इसके दानों तरफ गीली मिट्टी से लेप दें ताकि कीट शिशु ऊपर न चढ पायें।

फल मक्खी के नियंत्रण हेतु मालाथिआन नामक दवा 50 मि.ली. को 50 ली. पानी में घोलकर अप्रैल से मई के बीच 15–20 दिनों के अंतर पर तीन–चार बार छिडकाव करें एवं फल मक्खी ट्रैप (फेरोमोने ट्रैप) 10 –12 प्रति हेक्टेयर की दर से बगीचे में रखे ताकि कीट नियंत्रण हो सके। बीमारियों से बचाव के लिए घुलनशील गंधक के 2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें। उकठा रोग के नियंत्रण हेतु जिनबे 0.2 प्रतिशत या बोर्डो मिश्रण (44:50) का प्रयोग करना चाहए। एन्थ्रोक्नोज से बचाव हेतु साफ या कम्पेनियन नामक दवा 0.2 प्रतिशत घोल इस्तेमाल करें।

फलन एवं उपज उपज में द्विवार्षिक फलन को समस्या पायी जाती है। एक वर्ष वृक्ष में अधिक फलते है तो अगले वर्ष बहुत कम। यह समस्या अनुवांशिक है। अतः इसका कोई बहुत कारगर उपाय नहीं है। विगत वर्षो में आम को कई संकर किस्में विकसित हुयी है। जो इस समस्या से मुक्तहै अतः प्रति वर्ष फल लेने के लिए संकर किस्मों को प्राथमिकता देनी चाहिए। आम के वृक्ष चार–पांच साल की अवस्था में फलना प्रारम्भ करतें है और 12–15 साल की अवस्था में पूर्ण रूपेण प्रौढ हो जाती है अगर इनमें फलन काफी हद तक स्थायी हो जाती है। एक प्रौढ वृक्ष से 1000 से 3000 तक फल प्राप्त होते है कलमी पौधे अच्छी देख–भाल से 60–70 साल तक अच्छी तरह फलते है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें

वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

कृषि विज्ञान केन्द्र जाले दरभंगा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,

पूसा, समस्तीपुर बिहार

मो. नं. : 62877 97170

ई–मेलः head.kvk.jale@rpcau.ac.in

प्रसार पुस्तिका : D/H/L/415/2024

आम का उन्नतशील प्रबंधन

लेखक

डॉ. प्रदीप कुमार विश्वकर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ
उद्यान (फल विज्ञान)

डॉ. दिव्यांशु शेखर
वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान

श्रीमती पूजा कुमारी
विषय वस्तु विशेषज्ञ
गृहविज्ञान

डॉ. पवन कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ
मत्स्य विज्ञान

डॉ. चन्दन कुमार
प्रक्षेत्र प्रबंधक

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार

कृषि विज्ञान केन्द्र, जाले, दरभंगा

आम का उन्नतशील प्रबंधन

आम भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय फल है। इसे फलों का राजा कहा जाता है। व्यवसायिक तौर पर इसकी खेती लोकप्रिय एवं बहुत लाभकारी है। इसके अधिक फलन एवं आय के लिए सही समय पर वैज्ञानिक विधि से प्रबन्धन जरूरी है जिसका वर्णन कुछ इस प्रकार है।

उन्नाशील किस्मों का चुनाव

आज भारत में कई किस्में उगायी जाती है। हर किस्म की अपनी अलग विशिष्टता होती है। आम को आदर्श किस्म वह है जिसके फल मध्यम आकार के 1 किलो में 4 फल हों तथा जिसके गूदा की गुणवत्ता भी सभी को पसंद आये। फलों की गुठली पतली एवं छोटी हो। गूदा रेशारहित सुवासित, मीठा खट्टा स्वाद के सुरुचिपूर्ण मेल से बना हो। किस्म के वृक्षों में हर साल फलने की प्रवृत्ति हो तथा कीडे, बीमारियों एवं अन्य व्याधियों के प्रति सहिष्णु हो ऐसी आदर्श किस्म की पहचान एवं चयन आवश्यक है। भारत में उगाई जाने वाली आम की प्रजातियां जैसे मालदा, लंगडा, सिपिया, सुकुल, दशहरी, बम्बई, चौसा, जर्दालु, अल्फोंसो, गुलाब खाश, फजली, कृष्णभोग, हिमसागर आदि बहुत लोकप्रिय है। समस्तीपुर जिले के पूसा प्रखण्ड में बथुआ नामक प्रभेद काफी क्षेत्र में उगाया जाता है। इसकी विशेषता यह है कि इसके फल काफी देर से पकते है तथा सबसे अन्त में बाजार में आने के कारण अधिक कीमत पर बिकते हैं। इस किस्म की भंडारण क्षमता भी अधिक है।

पिछले दो दशकों में आम की कई संकर किस्मों का विकास हुआ है। संकर किस्मों की प्रमुख विशेषता यह है कि इनमें हर साल फलने की प्रवृत्ति पायी जाती है। अतः हर वर्ष फलन प्राप्त करने के लिए आप इन किस्मों का चयन कर सकते है। ये किस्में है आम्रपाली, मल्लिका, सिन्धु, महमूद बहार, प्रभाशंकर, सबरी, जवाहर, अर्का अरुणा, अर्का पुनीत, अर्का उदया इत्यादि।

मिट्टी का उत्त प्रबंधन

आम सभी प्रकार की मिट्टी में पैदा किया जा सकता है यदि इनमें पानी का निकास अच्छा हो। परन्तु सबसे उपयुक्त मिट्टी गहरी दोमट है जिसमें पानी का निकास अच्छा हो और पीद्र एचद्र मान 5.5 से 7.5 तक हो। कंकरीली, पथरीली, छिछली तथा अधिक क्षारीय मिट्टी में आम की बागवानी सफल सि) नहीं होती और बहुत कम उपज मिलती है। आम के पौधों में आच्छादन से नमी को बचाया जा सकता है जिससे खरपतवार नियंत्रण भी होता है।

नए बाग की स्थापना एवं रखरखाव

बाग का संस्थापन बाग लगाने के लिए पहले खेत की अच्छी तरह जुताई कर लें एवं पाटा चलाकर समतल कर लें। अब वृक्ष लगाने की जगह की चिन्हित कर लें। सदैव आम की अच्छी किस्मों के कलमी पौधे लगाये लगाने की दूरी 6 मी. × 4 मी. या 5 मी. × 5 मी.रखें.। आम्रपाली किस्म 2.5 मी. × 2.5 मी. की दूरी पर लगायी जा सकती है चिन्हित जगह पर 90 से.मी. (3 फोटो) की लम्बाई 3 फीट चौडाई एवं 3 फीट गहराई वाला एक गढ़ा खोदें। खोदे गये सभी गढों को ऊपर आधी मिट्टी एक तरफ तथा नीचले हिस्से को आधी मिट्टी दूसरे तरफ रखें मिट्टी को 15–20 दिनों तक धूप लगने दें। गड्ढा खोदने का कार्य मई के प्रथम सप्ताह में करना चाहिए। भरते समय गढे की ऊपरी मिट्टी में 20–25 किलो कम्पोस्ट, किलो खल्ली एवं 50 ग्राम थीमेट मिलाकर इस मिश्रण को गढ़े में डालें। तत्पश्चात यदि गदे में और मिट्टी डालने की आवश्यकता पडे तो गढ़ से खोदी गयी निचली मिट्टी का इस्तेमाल करें एवं इसी मिट्टी से चाला बनालें। एक दो वर्षो के बाद जब गई में भरी गयी मिट्टी पूर्णतः बैठ जाय पौधों की रोपाई करें।

वृक्ष रोपण का कार्य साधारणतः जुलाई अगस्त में किया जाता है जबकि वातावरण में काफी नमी रहती है। फरवरी–मार्च में भी पौधे लगाये जा सकते है परन्तु इनमें उतनी सफलता नहीं मिलती जितनी वर्षा ऋतु में लगाये हुए पौधों में फरवरी–मार्च में लगाये गये पौधों को अधिक पानी देने की आवश्यकता होती है तथा इन्हें लू से बचाने का भी उचित प्रबन्ध करना आवश्यक होता है। वृक्ष रोपन बादल वाले दिन या संभवतः शाम के समय करना चाहिए जबकि तेज धूप न हो।

पौधा लगाते समय जडों के पास मिट्टी के गोले से लिपटी हुई पास या टाट के टुकडों या पोलिथीन की थैली को हटा देना चाहिए तथा यह ध्यान देना चहिए कि ऐसा करते समय जडों को क्षति न पहुंचे। पौधा लगाते समय ध्यान दे कि पौधे को मिट्टी में उतना ही दबाना है जितना कि वह नर्सरी में रखते समय मिट्ट में दबाया गया था। चश्मा या कलम के जुड़ाव का स्थान भूमि तल से करीब 22 से.मी. द्ध10 इंचऋ अवश्य ऊपर रहना चाहिए। पौधा लगाने के बाद मिट्टी को अच्छी तरह दबा देना चाहिए और सिंचाई करनी चाहिए।

पोषक तात्त प्रबंधन

खाद एवं उर्वरकों का उपयोग लगाने के साल बाद जुलाई–अगस्त में आरंभ करना चाहिए। एक वर्ष बाद 10 किलो कम्पोस्ट आधा किलो खल्ली, 200 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम सिंगलसुपर फ स्फेट एवं 200 ग्राम सल्फेट आफ पोटास का इस्तेमाल करें। उर्वरक या खाद का प्रयोग पेड के चारों तरफ एक थाला बनाकर करना चाहिए। एक वर्ष के पौधे के लिए थाला प्रमुख तने से 30 से. मी. की दूरी छोड कर पेड से 1 मीटर के घेरे में बनाना चाहिए। मिट्टी को 15 से 20 से.मी. गहराई तक खोदकर उसमें उर्वरक मिलाना चाहिए।

खाद का प्रयोग के तुरंत बाद सिंचाई अवस्य करे। प्रति वर्ष खाद की मात्रा बढाते जायें और अन्ततः 10 या 11 वर्षो के उपरान्त जब वृक्ष प्रौढ़ हो जाय तब उर्वरकों की मात्रा स्थिर कर देना चाहिए। प्रति वर्ष जून–जुलाई में फल को तोडने के उपरान्त 50–60 किलो कम्पोस्ट, 5 किलो खल्ली, 2 किलों यूरिया, 5 किलो सिंगल सुपर फास्फेट और 2 किलो सल्फेट आफ पोटास प्रति वृक्ष के हिसाब से वृक्ष की परीधि से थोडा भीतर की ओर प्रयोग करें। वृक्षों से अधिक एवं गुणवत्ता वाले फल प्राप्त करने के लिए पोषक तत्वों का समुचित प्रबंधन अतिआवश्यक है।

सिंचाई का प्रबंधन

वृक्षों को गर्मी में सिंचाई देना आवश्यक होती है। प्रारंभिक अवस्था में थाला बनाकर बालों को नालियों द्वारा जोड़कर सिंचाई करना चाहिए। वृक्ष जब बडे हो जायें तो पूरे खेत की सिंचाई की जा सकती है। फूल लगने से दो माह पूर्व सिंचाई